

प्रारम्भिक बाल्यावस्था के दौरान पढ़ना और लिखना

पार्थसारथी मिश्रा

इस लेख का प्रयोजन पूर्व–स्कूल के दिनों में बच्चों की पढ़ने और लिखने की क्षमता को विकसित करने के महत्त्व की चर्चा करना और अ–साक्षर समाजों के छोटे बच्चों के लिए साक्षरता का वातावरण बनाने की रणनीतियों के क्रियान्वयन करने की शुरुआत करने की सम्भावना की तलाश करना है। साक्षरता को सभी संस्कृतियों में बहुत सम्मान के साथ देखा जाता है। साक्षरता को प्रतिष्ठा तथा शक्ति का प्रतीक माना जाता है, यह कई कविताओं, लोकप्रिय कहावतों और लोक कथाओं से साबित होता है। आइए हम एक लोकप्रिय बंगाली कविता और एक हिन्दी कविता के उदाहरण लें:

'लिखा पोड़ा कोरे जेई
गाड़ी घोड़ा चोढ़ेसेई'

(वह जो पढ़ता और लिखता है, कारों में या घोड़े की पीठ पर घूमता है)

'लिखाई पढ़ाई नहीं सीखोगी,
तो गधे की तरह ही रहोगी'

(अगर तुम लिखना पढ़ना नहीं सीखती हो, तो तुम गधे का जीवन ही जिओगी)

बंगाली की नर्सरी कविता पढ़ने और लिखने को कारों या घोड़े की पीठ पर बैठकर यात्रा करने से जोड़ती है जबकि हिन्दी कविता का अर्थ है कि पढ़ना, लिखना आदमी को जानवर से अलग करता है।

बच्चे पढ़ना और लिखना कैसे शुरू करते हैं? मुझे बचपन में अकसर ही महान शिक्षाविद और समाज सुधारक ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की कथा सुनकर बड़ी जिज्ञासा होती थी। सुनते हैं कि उन्होंने स्कूल जाने से पहले ही अँग्रेजी अंक सीख लिए थे। किवदन्ती के अनुसार, ईश्वर चन्द्र नवम्बर 1828 में स्कूल में दाखिला लेने के लिए अपने पिता के साथ अपने पैदाइशी गाँव से पैदल चलकर कलकत्ता जा रहे थे। वे मील के हर पत्थर पर लिखे अंकों को नजदीक से देखते थे, उन अंकों की मानसिक छवियाँ बना ले रहे थे ताकि कलकत्ता पहुँचने तक वे उन अंकों को सीख चुके हों। बाद में वयस्क होने पर मैंने भी देखा कि मेरे बच्चे खिलौनों, घर के साज–सामानों पर चित्रित विभिन्न चिन्हों के प्रति आकृष्ट होते थे और किस तरह वे सूचनापट्टों, विज्ञापनपट्टों, चीजों के आवरणों (रैपरों) और मिठाई के डिब्बों तथा दवा की शीशियों आदि पर चित्रित शब्दों के माध्यम से दिए जाने वाले छपे हुए सन्देशों को समझने की कोशिश करते थे। मैं यह देखकर चकित होता था कि विद्यारम्भ के दिन औपचारिक रूप से पढ़ने–लिखने की गतिविधि में प्रवेश करने से पहले ही किस तरह एक धीमे और परोक्ष ढंग से साक्षरता से उनका परिचय हो गया था।

विद्यारम्भ जो साक्षरता की यात्रा की शुरुआत का मांगलिक अवसर होता है सामान्यतः साक्षर हिन्दू परिवारों में मनाया जाता है। इस रस्म के दौरान, बच्चों को किसी बुजुर्ग व्यक्ति की गोद में बिठाया जाता है, जो सोने की अँगूठी से बच्चे की जीभ पर भगवान गणपति का आह्वान लिखते हैं और फिर बच्चे से भी उसकी दाहिनी तर्जनी से रेत या चावल के पटल पर वही लिखवाते हैं। कई लोगों का विश्वास है कि बच्चों को तब तक पढ़ना–लिखना शुरू नहीं करना चाहिए जब तक कि विद्यारम्भ की यह रस्म पूरी न कर ली जाए। यह बेहद संभ्रातवर्गीय रीति बच्चे की अन्तर्निहित क्षमता को अनदेखा कर देती है। जबकि बच्चे के पास चिन्हों और प्रतीकों का अर्थ समझने की जन्मजात क्षमता होती है और वह अपने जन्म से ही दृश्य साक्षरता हासिल कर लेता है। किसी चित्र के रूप में प्रस्तुत की गई जानकारी से अर्थ निकालने की क्षमता बच्चा अपने निकट के परिवेश से हासिल करता है। जब बच्चे छपे हुए संकेतों को देखते हैं और उनके आकारों और रंगों की ओर आकृष्ट होते हैं, तो वे

संरचनाएँ देखना शुरू कर देते हैं, और जब कोई शब्द किसी तस्वीर के साथ आता है तो वे उस पर गौर करते हैं, और जब दो शब्द एक जैसे होते हैं तो उन्हें उसका भी पता लग सकता हैं। वे 'पढ़ने, और लिखने के बारे में ऐसी धारणाएँ निर्मित कर लेते हैं जो उन्हें सिखाई गई नहीं होतीं, उनके लिए गढ़ी गई नहीं होतीं और तब तक पारम्परिक भी नहीं बनी होतीं' (टील एवं सल्जबी, 1992:52)।

यदि बच्चे के अनुभव को समृद्ध बनाना प्रारम्भिक बचपन की शिक्षा का परम लक्ष्य हो, तो माता–पिता को अपने जिज्ञासु बच्चों का बहुत ही छोटी उम्र से पढ़ने लिखने से परिचय कराने में हिचकिचाना नहीं चाहिए। यदि माता–पिता शब्दों में और छपे हुए अक्षरों में अपने बच्चों की जिज्ञासा और रुचि को प्रज्वलित कर सकते हैं तो उन्हें उनकी रुचि के प्रति सकारात्मक सहयोग देना चाहिए (क्ले, 1991रू29)। साक्षर समाजों में, पढ़ने की या छपे हुए शब्दों से अर्थ निकालने की बच्चों की ललक माँ–बाप द्वारा उन्हें पढ़कर सुनाई जाने वाली कहानियों को सुनने से पैदा होती है। सुनने से पढ़ने का मार्ग प्रशस्त होता है, और जब वे छपे हुए शब्दों के वातावरण में डूब जाते हैं तो उससे बच्चों के दृश्य बोध के विकास का आधार बनता है।

यह एक स्थापित तथ्य है कि बच्चों के भाषाई विकास और उनके संज्ञानात्मक विकास के बीच एक घनिष्ठ रिश्ता होता है। बच्चों में उनके संज्ञानात्मक विकास के अनुरूप बहुत–सी भाषाई खोजें करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। दूसरे बच्चों के साथ खेलते हुए या बड़ों के साथ बातचीत करते हुए, वे अपने भाषाई कौशलों के साथ ढेर सारे प्रयोग करते हैं ताकि वे भाषा के सामाजिक रूप से उपयुक्त आदर्शों का उपयोग करके खुद को उपयुक्त रूप से सामाजिक बना सकें। वे शब्दों का प्रयोग करके वर्तमान, अतीत और भविष्य, ऊपर, नीचे या पास और दूर जैसी विभिन्न अवधारणाओं का वर्णन करने के लिए शब्दों का उपयोग करना सीखते हैं। यदि उन्हें कोई पैन या पेंसिल मिल जाए तो वे उससे दीवारों, फर्शों या उनके बिलकुल निकट उपलब्ध किसी वस्तु की सतह पर अनगिनत बिन्दु या छोटी रेखाएँ बनाते हैं। पैन या पेंसिल से किसी भी सतह पर निशान लगाने का कारण किन्हीं वस्तुओं पर ऐसे ही निशानों से उनका पूर्व परिचय होता है। 'वे ऐसे चिन्ह बनाते हैं जो अर्थ और स्वरूप, सूचना और सूचक के बीच किसी अभिप्रेरित सम्बन्ध पर आधारित होते हैं' (क्रेस, 1997:73)।

जब किसी बच्चे के हाथ में कोई किताब आती है तो उसकी प्रतिक्रिया क्या होती है? वह उसे पकड़ता है, खोलता है, कोई पन्ना पकड़ लेता है, और अकसर उसे फाड़ने की कोशिश करता है। कभी–कभी, अकेले में किताब को देखते हुए, बच्चा उसमें दिए गए चित्रों को देखेगा, उनसे बातें करेगा और ऐसे दिखाएगा जैसे कि वह उन्हें पढ़ रहा हो। उस बच्चे को अभी तक अक्षरमाला का कुछ भी अन्दाजा नहीं होता और वह चित्र और अक्षरमाला के अक्षर के बीच कोई भेद नहीं करता। उसके लिए दोनों ही छपी हुई तस्वीरें होती हैं जो कुछ कहती हैं। किसी चित्र को देखते हुए, चित्र की तरफ इशारा करके बच्चा अकसर अपने माता–पिता से पूछता है, "इसमें क्या लिखा है?" जिस दिन बच्चा यह जान लेता है कि तस्वीरें या छपे हुए पन्नों में कुछ रोचक होता है, तो साक्षरता की उसकी यात्रा शुरू हो जाती है। साक्षरता के बुनियादी सिद्धान्त (जैसे कि छपे हुए शब्द वास्तव में बोले गए शब्द ही होते हैं जिन्हें एक खास ढंग से लिखा गया होता है, छपे हुए शब्दों में अर्थ होते हैं और पढ़ना बाएँ से दाएँ या फिर किताब के अग्र भाग से पीछे की ओर होता है) बच्चे को तभी समझ में आना शुरू होते हैं जब उसे माता–पिता या किसी देखभाल करने वाले की दखलन्दाजी के बगैर किताबों को उलटने–पलटने, उनसे खेलने, उनसे बात करने का मौका दिया जाता है। गुडमैन (1992:6) ने सही कहा है कि, "व्यक्तियों में पढ़ने और लिखने की शुरुआत तब होती है जब उनमें यह समझ आ जाती है कि लिखित भाषा अर्थपूर्ण होती है।" पढ़ने की सामग्री से समृद्ध परिवेश इस जागरूकता को बढ़ा ही सकता है जो उभरती साक्षरता की एक पूर्व शर्त है। भारत सरकार के महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा तैयार की गई प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2012) में प्रारम्भिक बचपन के दौरान उभरती साक्षरता को विकसित करने के महत्त्व पर जोर दिया गया है।

साक्षरता पर होने वाली कोई भी चर्चा अकसर किसी साक्षर समाज और साक्षर परिवेश के बारे में हमारी पहले से बनी धारणा से प्रभावित रहती है। किसी साक्षर समाज का बच्चा साक्षरता के माहौल में साँस लेता है, साक्षरता में

रचा–बसा रहता है और उसके बढ़ने के दौर में साक्षरता उसके समग्र विकास का एक अभिन्न हिस्सा होती है। पर किसी अ–साक्षर समाज के बच्चे के बारे में हम क्या कहेंगे? क्या अ–साक्षर माता–पिता की संतानों में साक्षरता के विकास की कोई गुंजाइश है? कई भारतीय परिवारों में, माता–पिता अपने बच्चों को ढेर सारी छपी हुई सामग्री की मदद से साक्षरता प्रदान करने का खर्चीला सपना नहीं देख सकते। दिल्ली में 25–28 अप्रैल 2011 को प्रारम्भिक साक्षरता पर आयोजित किए गए परामर्श की रिपोर्ट कहती है कि, "कई बच्चों का भाषा के लिखित रूपों के साथ पहला सक्रिय परिचय तभी होता है जब वे स्कूल में कदम रखते हैं। ऐसे बच्चों को धीरे–धीरे, अनौपचारिक, सार्थक और गैर–डरावने तरीकों से पढ़ने और लिखने की दुनिया में प्रवेश कराने की जरूरत है। जब स्कूल जाने वाले ये नए बच्चे अपनी कक्षा में होने वाली चीजों को देखते हैं, अनौपचारिक ढंग से एक – दूसरे से बातचीत करते हैं और चित्रकला, गूदागादी, पढ़ने और लिखने की गतिविधियों में खुलकर और उद्देश्यपूर्वक भागीदारी करना शुरू करते हैं, तब वे भाषा के लिखित रूपों के बारे में जानकारी को छाँटना और हासिल करना तथा उनकी अवधारणाओं को समझना शुरू कर देते हैं।"

भारतीय सन्दर्भ में 0–6 साल तक के आयु वर्ग के बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बने आँगनवाड़ी केन्द्र अ–साक्षर परिवारों के बच्चों को छपे अक्षरों से परिचित कराने तथा उन्हें अपने से पढ़ने और लिखने के लिए प्रेरित करने के कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। दुर्भाग्यवश, आँगनवाड़ी की कार्यकर्ता उभरती साक्षरता के सिद्धान्त और व्यवहार में उपयुक्त ढंग से प्रशिक्षित नहीं होतीं, जिसके परिणामस्वरूप, वे बच्चों के साक्षरता अनुभव को कोई मजबूत आधार नहीं दे पातीं। आँगनवाड़ी केन्द्रों पर होने वाली पूर्व–स्कूल गतिविधियाँ अकसर औपचारिक स्कूली परिवेश में होने वाली पढ़ने–लिखने की औपचारिक गतिविधियों का सरलीकृत रूप होती हैं। माता–पिता को बच्चे के विकास के बारे में शिक्षित करने के दौरान, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता उन्हें इस बात के लिए प्रेरित कर सकती हैं कि वे अपने बच्चों को स्थानीय संसाधनों के रूप में उपलब्ध छपी हुई सामग्री का समृद्ध परिवेश मुहैया कराएँ।

जनजातीय बच्चों को अकसर आँगन में मनकों के साथ खेलते हुए देखा जा सकता है जहाँ वे उन विभिन्न अक्षरों के आकारों को बनाने की कोशिश करते हैं जिन्हें उन्होंने आँगनवाड़ी केन्द्रों पर देखा होता है। आँगनवाड़ी केन्द्रों पर आने वाले बच्चों को चित्र बनाने और गूदागादी के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, तथा आँगनवाड़ी की कार्यकर्ताओं को बच्चों को कहानियों की किताबें पढ़कर सुनाना चाहिए। यह देखा गया है कि आँगनबाड़ी की कार्यकर्ता सर्वेक्षण के कार्यों और पोषण से जुड़ी गतिविधियों के बोझ से इतनी दबी रहती हैं कि उन्हें बच्चों को कहानियों की किताबें पढ़कर सुनाने का समय ही नहीं मिलता। बच्चों की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कैसी भी हो, सभी बच्चों में अलग–अलग आकारों और चित्रों के प्रति उनके पूर्व ज्ञान और अनुभव के आधार पर अपने–अपने ढंग से प्रतिक्रिया देने की एक सहज प्रवृत्ति होती है। हमारे समाज के वंचित तबकों के बच्चे पढ़ना और लिखना क्यों नहीं सीख पाते, इसका कारण वह डरावना तरीका है जिसके द्वारा उनकी देखभाल करने वाले लोग उनका इन गतिविधियों से परिचय कराते हैं। यदि हम छोटे बच्चों का पढ़ने या लिखने से परिचय एक



ऐसी प्रदर्शन कला के रूप में कराएँ जिसके द्वारा वे अपनी नैसर्गिक सृजनात्मक आकांक्षा को अभिव्यक्त कर सकते हैं, तो कोई कारण नहीं है कि ये बच्चे भी पढ़ने और लिखने को एक आनन्ददायी गतिविधि के रूप में करने के लिए प्रेरित नहीं होंगे।

References:

1. Clay, Marie M. (1991). Becoming Literate.Portsmouth,NK:Heinemann.
2. Goodman,Yetta M.,1986. "Children Coming to Know Literacy" in Teale, W.H. and Sulzbt, E. (ed). Emergent Literacy: Writing and Reading, New Jersey,Ablex Publishing Corporation.
3. Kress,G. (1997). Before Writing: Rethinking the Pathway to Literacy. London: Routledge.
4. Report of the Consultation on Early Literacy with some partners of Sir Ratan Tata Trust and NavajbaiRatan Tata Trust, retrieved from **www.srtt.org/institutional_grants/...**
5. Teale, William H and Sulzby, Elizabeth. (1986). Emergent Literacy: Writing and Reading,New Jersey,Ablex Publishing Corporation.
6. The Early Childhood Education Curriculum Framework(Draft) 2012, The Ministry of Women and Child Developme, retrived from **http://wcd.nic.in/schemes/ECCE/Quality_Standards_for_ECCE3%20(7).pdf**

पार्थसारथी मिश्रा अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु के विश्वविद्यालय रिसोर्स सेण्टर में अकैडमिक्स एण्ड पैडागॉजी के विशेषज्ञ हैं। वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में जुलाई 2011 से काम कर रहे हैं। भाषा का अध्यापन, साहित्यिक शैली अध्ययन, अँग्रेजी भाषा का शिक्षण तथा शिक्षक प्रशिक्षण उनकी रुचि के क्षेत्र हैं। उनसे partha.misra@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : भरत त्रिपाठी